ओ३म्

वैदिक हवन पद्धति

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

आर्य समाज,
७ सी.एम. एच रोड,
इन्दिरानगर,
बेंगलूर- ५६० ०३८
e.mail : aryasamajbangalore@dataone.in
Website : www.aryasamajbangalore.org
Ph: 080-2525-7756, 2529-4918

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनामन्त्राः

ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व ।। १ ।। ---यजुः० ३०।३।।

अर्थ–हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर। आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए। जो कल्याणकारक गुण, कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं वह सब हमको प्राप्त कीजिए ।। १ ।।

हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त्त॒ताग्रे॑ भू॒तस्य॑ जा॒तः पति॒रेक॑ आसीत्। स दा॑धार पृथि॒वीं द्यामु॒तेमां कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ।। २ ।। ---यजुः० १३।४।।

जो स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे सूर्य–चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनस्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें ।।२ ।।

य आ॑त्म॒दा ब॑ल॒दा यस्य॒ विश्व॑ उ॒पास॑ते प्र॒शिषं॒ यस्य॑ दे॒वाः। यस्य॑ च्छा॒याऽमृतं॒ यस्य॑ मृ॒त्युः कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम ।। ३ ।। ---यजुः० २४।१३।।

जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्षसुखदायक है जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देनेहारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञापालन करने में तत्पर रहें ।। ३ ।।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव । य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।। ४ ।।

---यजुः० २३ ।३।।

जो प्राणवाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है जो इस मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुख स्वरूप सकल ऐश्वर्य के देनेहारे परमात्मा की उपासना अर्थात् अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा–पालन में समर्पित करके विशेष भक्ति करें ।। ४ ।।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः । यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।। ५ ।।

---यजुः० ३२ ।६ ।।

जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वाभाववाले सूर्य आदि और भूमि को धारण किया, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया और जिस ईश्वर ने दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक–लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त अर्थात्

जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें ।। ५ ।।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।६ ।। ---ऋ० १०।१२१।१०।।

वे II 136

हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा ! आप से भिन्न दूसरा कोई उन इन सब उत्पन्न हुए जड़–चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं । जिस–जिस पदार्थ की कामनावाले हम लोग आपका आश्रय लेवें और वाञ्छा करें उस–उस की कामना हमारी सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें ।।६ ।।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।।७ ।। ---यजु:० ३२ ।१० ।।

वे II. 98

हे मनुष्यो ! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक वह सब कामों का पूर्ण करनेहारा, सम्पूर्ण लोकमात्र और नाम–स्थान–जन्मों को जानता है और जिस सांसारिक सुख–दु:ख से रहित, नित्यानन्द–युक्त, मोक्षस्वरूप, धारण करनेहारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छा–पूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य,

राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें ।। ७ ।।

वे II
२०

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ।।८।। ---यजुः० ४०।१६।।

हे स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करनेहारे सकल सुखदाता परमेश्वर ! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे , धर्मयुक्त, आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइये और हमसे कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिये। इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें ।।८।।

।। इतीश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासनाप्रकरणम् ।।

(३) अथ स्वस्तिवाचनम्

(प्रथम रविवार)

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ।। १ ।। ---ऋ० १।१।१।।

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव । सचस्वा नः
स्वस्तये ।।२ ।। ---ऋ० १।१।९।।

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्य -
दितिरनर्वणः । स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति
द्यावापृथिवी सुचेतुना ।।३।। ---ऋ० १।५१।११।।

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य
यस्पतिः । बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो
भवन्तु नः ।।४।। ---ऋ० ५।५१।१२।।

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः
स्वस्तये। देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः
पात्वंहसः ।।५।। ---ऋ० ५।५१।१३।।

स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति । स्वस्ति
न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ।। ६ ।।
---ऋ० ५।५१।१४।।

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ।।७।। —ऋ० ५।५१।१५।।

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः । ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।।८।। ---ऋ० ७।३५।१५।।

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः । उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्न - सस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये ।।९।।

---ऋ० १०।६३।३।।

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः। ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ।।१०।। ---ऋ० १०।६३।४।।

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् । ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये ।।११।। ---ऋ० १०।६३।५।।

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन। को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ।। १२।। ---ऋ० १०।६३।६।।

येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः । त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त्त सुपथा स्वस्तये ।। १३ ।। ---ऋ० १०।६३।७।।

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः । ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ।। १४ ।। ---ऋ० १०।६३।८।।

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ।। १५ ।। ---ऋ० १०।६३।९।।

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् । दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ।। १६ ।। ---ऋ० १०।६३।१०।।

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिहुतः । सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ।। १७ ।। ---ऋ० १०।६३।११।।

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रा - मघायतः। आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये।। १८ ।। ---ऋ० १०।६३।१२।।

अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि। यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ।। १९ ।। ---ऋ० १०।६३।१३।।

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने । प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ।।२०।। ---ऋ० १०।६३।१४।।

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति। स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ।।२१ ।। ---ऋ० १०।६३।१५।।

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति । सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ।।२२।। ---ऋ० १०।६३।१६।।

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माघशँ सो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।।२३।। ---यजु:० १।१।।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽ अपरीतासऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।।२४।।---यजु:० २५।१४।।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाँ रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानाँ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।।२५ ।।---यजु:० २५।१५।।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसंद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ २६ ॥ ---यजुः० २५।१८॥

स्वस्ति नऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२७॥ ---यजुः० २५।१९॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥२८॥ ---यजुः० २५।२१॥

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ॥२९॥ ---साम० पूर्वा० प्रपा० १, मन्त्र १ ॥

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने ॥ ३० ॥ ---साम० पूर्वा० प्रपा१,मन्त्र२॥

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः । वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥३१॥

---अथर्व० १।१।१॥

॥ इति स्वस्तिवाचनम् ॥

*****

(४) अथ शान्तिकरणम्

(तृतीय रविवार)

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ।। १ ।। ---ऋ० ७।३५।१।।

शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्य्यमा पुरुजातो अस्तु ।।२।। ---ऋ० ७।३५।२।।

शं नो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः । शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ।। ३ ।। ---ऋ० ७।३५।३।।

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रा वरुणावश्विना शम्। शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ।। ४ ।। ---ऋ० ७।३५।४।।

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु । शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ।।५।। ---ऋ० ७।३५।५।।

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह शृणोतु ।।६।। ---ऋ० ७।३५।६।।

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ॥ ७ ॥ ---ऋ० ७।३५।७॥

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥८॥ ---ऋ० ७।३५।८॥

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥९॥ ---ऋ० ७।३५।९॥

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ॥ १०॥ ---ऋ० ७।३५।१०॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥११॥ ---ऋ० ७।३५।११॥

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥ १२॥ ---ऋ० ७।३५।१२॥

शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः। शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा॥ १३॥ ---ऋ० ७।३५।१३॥

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।। १४ ।। ---यजुः० ३६।८।।

शं नो वातः पवताꣳ शं नस्तपतु सूर्य्यः । शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु ।।१५।।--यजुः० ३६।१०।।

अहानि शम्भवन्तु नः शꣳ रात्रीः प्रति धीयताम् । शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणा रातहव्या । शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः ।। १६ ।। ---यजुः० ३६।११।।

शं नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शँयोरभि स्रवन्तु नः ।। १७ ।। ---यजुः० ३६।१२।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।१८।। ---यजुः० ३६।१७।।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।। १९ ।। ---यजुः० ३६।२४।।

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरङ्गमंज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।। २०।। ---यजुः० ३४।१।।

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२१॥ ---यजुः० ३४।२॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२२॥ ---यजुः० ३४।३॥

येनेदम्भूतं भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२३॥ ---यजुः० ३४।४॥

यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिँश्चित्तँ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२४॥ ---यजुः० ३४।५॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिनऽइव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२५॥ ---यजुः० ३४।६॥

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः ॥ २६॥ ---साम० उत्तरा० १।१।३॥

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥२७॥ ---अथर्व० १९।१५।५॥

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥२८॥ ---अथर्व० १९।१५।६॥

॥ इति शान्तिकरणम् ॥

****

9.6.2013

आचमनमन्त्राः

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥ इससे एक
ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥ इससे दूसरा
ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥ इससे तीसरा

–तैत्तिरीय आरण्यक प्र० १० । अनु० ३२,३५॥

हथेली में जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रों से पहले दाहिनी ओर, पश्चात् बायीं ओर के अंगों को स्पर्श करें ।

अङ्गस्पर्शमन्त्राः

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु ॥ इस मन्त्र से मुख
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से नासिका के दोनों छिद्र
ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों आँख
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों कान

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ।। इस मन्त्र से दोनों बाहु

ओम् ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु ।। इस मन्त्र से दोनों जंघा और

ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।।

– पारस्कर गृ०. कण्डिका ३, सू०२५ ।।

इस मन्त्र से सारे शरीर पर जल के छींटे देना ।

****

अग्न्याधान मन्त्रः

ओं भूर्भुवः स्वः । – गोभिल० गृ०प्र०१,खं१,सू०११ ।।

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा । तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ।।

– यजुः० ३।५ ।।

अग्नि प्रदीप्त करने का मन्त्र

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँ् सृजेथामयं च । अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ।। – यजुः० १५।५४ ।।

समिदाधान के मन्त्र

16.6.2013

ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे – इदं न मम ।। १ ।।

इससे पहली –आश्व०गृह्य०१।१०।१२ ।।

ओं सुमिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयुतातिथिम्। आस्मिन् हृव्या जुहोतन् स्वाहा ।। २ ।।

–यजुः० ३।१।। इससे और

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नयै जातवेदसे स्वाहा ।। इदमग्नये जातवेदसे – इदं न मम ।। ३ ।। (दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा चढाएँ ।)

–यजुः० ३।२ ।।

तन्त्वा सुमिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा ।। इदमग्नयेऽङ्गिरसे – इदं न मम ।।४ ।।

–यजुः० ३।३ ।।

(इससे तीसरी समिधा)

घृताहुति – मन्त्रः

(पांच आहुतियाँ)

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्च – सेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ।। इदमग्नये जातवेदसे – इदन्न मम ।।१ ।।

– आश्व० गृह्य०१।१०।१२।।

जल-प्रसेचन-मन्त्राः

ओम् अदितेऽनुमन्यस्व। —इससे पूर्व दिशा में

ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व। —इससे पश्चिम दिशा में

ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व। —इससे उत्तर दिशा में

— गोभि० गृह्य० १।३।१-३॥

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥ (इससे वेदी के चारो ओर) —यजुः० ३०।१॥

आघारावाज्यभागाहुति-मन्त्रः

ओम् अग्नये स्वाहा । इदमग्नये -इदं न मम ॥

इस मन्त्र से वेदी के उत्तर -भाग अग्नि में

ओं सोमाय स्वाहा ।

इदं सोमाय -इदं न मम ॥—गोभि० गृह्या० १।८।१-३॥

इस मन्त्र से दक्षिण - भाग अग्नि में

आज्यभागाहुति मन्त्रः

ओं प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये -इदं न मम॥

ओम् इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय -इदं न मम।

इन दोनों मन्त्रों से वेदी के मध्य में दो आहुति दें ।

30.6.2013

प्रात:काल आहुति के मन्त्र:

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥ १ ॥

–यजुः० ३।९॥

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥

–यजुः० ३।९॥

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ३ ॥

–यजुः० ३।९॥

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥ –यजुः० ३।१०॥

सायंकाल आहुति के मन्त्र

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ १ ॥

ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥ २ ॥

अब तीसरे मन्त्र को मन में उच्चारण करके तीसरी आहुति देनी चाहिए

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥ ३ ॥

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणोऽग्निर्वेतु स्वाहा ॥ ४ ॥ यजु० ३.१०

प्रातः-सायंकालीन आहुतिमन्त्राः

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा । इदमग्नये प्राणाय - इदं न मम ।। १ ।।

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा । इदं वायवेऽपानाय- इदं न मम ।। २ ।।

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय - इदं न मम ।। ३ ।।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान - व्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणा पानव्यानेभ्यः - इदं न मम ।। ४ ।।

ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ।। ५ ।।

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।। ६ ।।

-यजुः० ३२।१४ ।।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा ।। ७ ।। -यजुः० ३०।३।।

ओम् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ।। ८ ।। -यजुः० ४०।१६।।

व्याहृत्याहुतिमन्त्राः

ओं भूरग्नये स्वाहा ।। इदमग्नये – इदं न मम ।। १ ।।
ओं भुववर्वायवे स्वाहा ।। इदं वायवे– इदं न मम ।। २ ।।
ओं स्वरादित्याय स्वाहा ।। इदमादित्याय –इदं न मम ।।३ ।।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा ।। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः – इदं न मम ।। ४ ।।

स्विष्टकृदाहुति मन्त्रः

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत्स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते –इदं न मम ।।

–आश्व० १ ।१० ।२२; शतपथब्रा० १४ ।९ ।४१२४

प्राजापत्याहुति मन्त्रः

ओं प्रजापतये स्वाहा – इदं प्रजापतये – इदं न मम ।।

(इससे मौन करके एक आहुति)

आज्याहुतिमन्त्राः (पवमानाहुतयः)
(केवल घृत की चार आहुतियां)

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा ।। इदमग्नये पवमानाय–इदन्न मम ।। १ ।। –ऋ० ९।६६।१९।।

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयं स्वाहा ।। इदमग्नये पवमानाय– इदन्न मम ।। २ ।। –ऋ० ९।६६।२०।।

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय –इदन्न मम ।।३ ।। –ऋ० ९।६६।२१।।

ओं भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा । इदं प्रजापतये – इदन्न मम ।। ४ ।। –ऋ० १०।१२१।१०।।

अष्टाज्याहुतिमन्त्राः

ओं त्वं नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम् - इदं न मम ।।१।।

-ऋ० ४।१।४।।

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां - इदं न मम ।। २ ।।

-ऋ० ४।१।५।।

ओम् इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युरा चके स्वाहा। इदं वरुणाय - इदं न मम ।।३।।

-ऋ० १।२५।१९।।

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा। इदं वरुणाय-इदं न मम ।। ४ ।।

-ऋ० १।२४।११।।

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाःपाशा वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदं न मम ।। ५ ।।

-कात्या० श्रौ०२५।१।११।।

ओम् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्ति पाश्च सत्यमित्त्वमया असि। अया यो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजँ स्वाहा। इदमग्नये अयसे – इदं न मम ॥६॥

–कात्या०श्रौ०२५।१।११॥

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये च – इदं न मम ॥७॥ –ऋ० १।२४।१५॥

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञँ हिँ सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं जातवेदोभ्याम् – इदं न मम ॥८॥–यजु:५।३॥

अथ गायत्री – मन्त्रः

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा ॥८॥ –यजु:०३६।३॥

(इसका उच्चारण तीन बार करें)

नमस्कार – मन्त्रः

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च –यजु:० १६।४१॥

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा: जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे – निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।।
–यजु: ० २२ ।२२।।

स्वाहा

पूर्णाहुति – मन्त्रः

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।।
(तीन आहुतियां)

इस मन्त्र से, खड़े होकर, बचे हुए घृत से पतली धार बनाकर यज्ञ में जलती समिधाओं पर डालें ।

ते I. 2.97

ओम् वसोः पवित्रमसि शतधारम्
वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ।
देवस्त्वा सविता पुनातु
वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा काम धुक्षः ।।

–यजुर्वेद–१–३।।

प्रार्थना

हे सर्वाधार, सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर । तुम अनंत काल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो। प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को तुम्हीं प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो कुछ शुभ है तथा हितकर है उसे तुम बिना माँगे स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो। तुम्हारे आँचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है। तुम्हारी चरण – शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत्पिता परमेश्वर ! हम में सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो। हम तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें । अन्त:करण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें। काम, क्रोध,लोभ, मोह , ईर्ष्या , द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें। अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो ! हम तुम्हें पुकारते हैं और तुम्हारा आँचल पकड़ते हैं।

हे परम पावन प्रभो ! हम में सात्विक वृत्तियाँ जागरित हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता,अहङ्कारशून्यता इत्यादि शुभ भावनाएँ हमारी सम्पत्ति हों। हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो , मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो, तुम्हारे संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों । हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो । विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों । हमारा व्यक्तित्व महान तथा विशाल हो।

हे प्रभो ! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो । दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले तुम्हारे चरणारविन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो, इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करें ।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

यज्ञ–भजन

पूजनीय प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये ।
छोड़ देवें छल –कपट को मानसिक बल दीजिये ।।१।।

वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें ।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक – सागर से तरें ।।२।।

अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर – उपकार को ।
धर्म – मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ।।३।।

नित्य श्रद्धा – भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें ।
रोग– पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें ।।४।।

भावना मिट जाय मन से पाप– अत्याचार की ।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर–नारि की ।।५।।

लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिए।
वायु–जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये ।।६।।

स्वार्थ–भाव मिटे हमारा, प्रेंम–पथ–विस्तार हो ।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ।।७।।

हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे ।
''नाथ'' करुणारूप करुणा आपकी सब पर रहे ।।८।।

प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।।

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय ।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन् पूरी होय ।।
विद्या, बुद्धि, तेज , बल सबके भीतर होय ।
दूध –पूत धन–धान्य से वंचित रहे न कोय ।
आपकी भक्ति – प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग– द्वेष से चित्त मेरा, कोसों भागे दूर ।।
मिले भरोसा आपका, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश ।।
पाप से हमें बचाइये, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनायकर, सबको करो निहाल।।
दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
धैर्य हृदय में वीरता, सबको दो करतार ।।
हाथ जोड़ विनती करूँ, सुनिये कृपानिधान।
साधु– संगत सुख दीजिये, दया नम्रता दान ।।

****

ओ३म्

संगठन –सूक्त

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।। १ ।।

सङ्गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।। २ ।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।। ३ ।।

समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।। ४ ।।

हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को ।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिए धन वृष्टि को ।।

प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो ।
पूर्वजों की भांति तुम कर्तव्य के मानी बनो ।।

हों विचार समान सब के चित्त मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हों ।।

हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिस से बढ़े सुख सम्पदा।।

भजन–१

ओम् है जीवन हमारा, ओम् प्राणाधार है ।
ओम् है कर्त्ता विधाता, ओम् पालनहार है ।।
ओम् है दु:ख का विनाशक, ओम् सर्वानन्द है ।
ओम् है बल–तेजधारी, ओम् करुणाकन्द है ।।
ओम् सबका पूज्य है, हम ओम् का पूजन करें ।
ओम् ही के ध्यान से, हम शुद्ध अपना मन करें।।
ओम् के गुरुमन्त्र जपने से, रहेगा शुद्ध मन ।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढेगी, धर्म में होगी लगन ।।
ओम् के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा ।
अन्त में यह ओम् हमको मुक्ति तक पहुँचाएगा ।।

भजन –२

शरण प्रभु की आओ रे, यही समय है प्यारे ।।
आओ दर्शन पाओ रे, यही समय है प्यारे ।।
उदय हुआ ओं नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे।।
अमृत झरना झरता इससे, पीकर अमर हो जाओ रे।।
छल–कपट और झूठ को त्यागो,सत्य में चित्त लगाओ रे।।
प्रभु की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे।।
कर लो प्रभु –नाम का सुमिरन, नहीं पीछे पछताओ रे ।।
छोटे–बड़े सब मिल के खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे।।

भजन–३

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो ।
जिनके कछु और आधार नहीं, तिन के तुम ही रखवारे हो ।। १ ।।
सब भाँति सदा सुखदायक हो, दुःख दुर्गुण नाशनहारे हो ।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो ।।२ ।।
भुलिहैं हम ही तुमको, तुम तो हमरी सुधि नाहि बिसारे हो ।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो ।।३ ।।
महाराज महा महिमा तुम्हरी, समझें बिरले बुधिवारे हो ।
शुभ शान्ति–निकेतन प्रेमनिधे, मन–मन्दिर के उजियारे हो ।।४ ।।
यहि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो ।
तुम सों प्रभु पाय प्रतापहरि, केहि के अब और सहारे हो ।।५ ।।

भजन–४

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है ।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है ।।
टुक नींद से अखियाँ खोल ज़रा, और अपने प्रभु से ध्यान लगा ।
यह प्रीति करन की रीति नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है ।
जो कल करना है आज कर ले, जो आज करना है अब करले ।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है ।।
नादान भुगत करनी अपनी, ओ पापी पाप में चैन कहाँ ।
जब पाप की गठरी सीस धरी, फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है ।।

भजन–५

ओम् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे। ओम् ० ॥ १ ॥
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मन का।
सुख–सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का। ओम् ० ॥२॥
मात – पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी। ओम् ० ॥ ३ ॥
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी। ओम् ० ॥ ४ ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालनकर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्ता। ओम् ० ॥ ५ ॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूँ दयामय दो मुझको सुमति। ओम् ० ॥ ६ ॥
दीनबन्धु दुःखहर्ता तुम रक्षक मेरे।
करुणा – हस्त बढ़ाओ शरण पड़ा तेरे। ओम् ० ॥७॥
विषय – विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा – भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा। ओम् ० ॥ ८ ॥

भजन–६

ओम् अनेक बार बोल, प्रेम के प्रयोगी ।। टेक ।।
है यही अनादि नाद, निर्विकल्प निर्विवाद,
भूलते न पूज्य पाद, वीतराग योगी ।। ओम् ०
गा रहे प्रमाण मान, अर्थ योजना बखान,
गा रहे गुणी सुजान, साधु स्वर्ग – भोगी ।। ओम् ०
ध्यान में धरें विरक्त, भाव से भजें सुभक्त,
त्यागते अधो अशक्त, पोच पाप –रोगी ।। ओम् ०
शंकरादि नित्य नाम, जो जपे बिसार काम,
तो बने विवेक धाम, मुक्ति क्यों न होगी ।। ओम् ०

भजन–७

तेरे दर को छोड़कर, किस दर जाऊँ मैं ।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊँ मैं ।।
जबसे याद भुलाई तेरी, लाखों कष्ट उठाये हैं ।
क्या जानूँ इस जीवन अन्दर कितने पाप कमाये हैं ।।
हूँ शर्मिन्दा आपसे, क्या बतलाऊँ मैं ।। तेरे ० ।।
मेरे पाप–कर्म ही तुझसे प्रीति न करने देते हैं ।
कभी जो चाहूँ मिलूँ आपसे, रोक मुझे ये लेते हैं ।।
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊँ मैं ।। तेरे ० ।।

है तू नाथ! वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते हैं।
ऋषि-मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं।।
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊँ मैं।। तेरे ०।।
जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उमर सँभालूँ मैं।
प्रेमपाश में बँधा आपके गीत प्रेम के गा लूँ मैं ।।
जीवन प्यारे 'देश' का सफल बनाऊँ मैं ।। तेरे ०।।

भजन-८

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में ।
हैं जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ।।
मेरा निश्चय है एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ जगती-भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।
या तो मैं जग से दूर रहूँ, और जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में।।
यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले तो तब चरणों का पुजारी रहूँ।
मुझ पूजक की इक-इक रग का हो तार तुम्हारे हाथों में।।
जब-जब संसार का बन्दी बन दरबार तेरे में जाऊँ मैं।
तब-तब हो पापों का निर्णय सरकार तुम्हारे हाथों में ।।
मुझमें तुझमें है भेद यही, मैं नर हूँ तू नारायण है।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।

भजन–९

ओ३म् भज, ओ३म् भज, भज रे मना
प्रभु भज, प्रभु भज, भज रे मना
ओ३म् का नाम सुख का सागर
ओ३म्, नाम भज कर तरें भवसागर
ओ३म् नाम सिमरन से दुख घटते
माया मोह के फंदे कटते..........
ओ३म् सुधारस , अमृत की खान
देता मानव को भक्तिदान.........
ओ३म् की महिमा है अपरम्पार
भज ले मन उसे तू बारम्बार.......
ओ३म् भक्ति मारग दिखलाता
प्रभु के चरणों में ले जाता..........
ओ३म् नाम प्राणी जो गाये
मुक्ति के पथ पर बढ़ जाये.........

भजन–१०

ओम् अनन्त अनादि अपार, अजर अमर सब का आधार

१ सत्य स्वरूप प्रकाश निधान, परमानन्द परम सुख धाम
शिव सुन्दर शान्ति अभिराम, करुणा सागर कृपानिधान

२ शुद्ध, बुद्ध, पावन, ओम का नाम
संकट मोचन ओम् का नाम
सत्य सनातन ओम् का नाम
निर्मल चेतन ओम् का नाम। ओम अनन्त........

३ दया का सागर, करुणाकन्द
परम कृपालु परमानन्द
दीन दयालु ब्रह्मानन्द
मुक्ति का दाता, सच्चिदानन्द । ओम् अनन्त ......

४ विश्व विधाता, एक ओंकार
दु:ख का त्राता एक ओंकार
अमृत दाता एक ओंकार
मोक्ष प्रदाता एक ओंकार । ओम् अंनन्त.........

शान्तिपाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्ति-र्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

॥ ओ३म् ॥

आर्यसमाज के नियम

१. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है ।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है । उसी की उपासना करनी योग्य है ।

३. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए ।

६. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

७. सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए ।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए ।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

Edition - 5 (7000) January 2013